गजानन माधव मुक्तिबोध (5)

जन्म - कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवंबर सन् 1917 को श्योपुर, ग्वालियर मे हुआ।

प्रमुख कृतियाँ : चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल (कविता संग्रह) ; काठ का सपना, सतह से उठता आदमी, विपात्र ; नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, कामायनी - एक पुनर्विचार, नयी कविता का आत्मसंघर्ष (अब 'आखिर रचना क्यों' नाम से) एक साहित्यिक की डायरी, समीक्षा की समस्याएँ (आलोचना) और भारत : इतिहास और संस्कृति आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

निधन : 11 सितंबर सन् 1964 को नयी दिल्ली में उनका देहावसान हो गया।

साहित्यिक विशेषताएँ : हार का बदला चुकाने वाले संकल्पधर्मा कवि मुक्तिबोध का संपूर्ण जीवन ही संघर्षमय रहा। उन्होंने 20 वर्ष की छोटी-सी उम्र में ही बड़नगर मिडिल स्कूल में मास्टरी की। तत्पश्चात शुजालपुर, उज्जैन, बंगलौर, इंदौर, मुंबई, कोलकाता, जबलपुर आदि स्थानों पर अध्यापन कार्य से पत्रकारिता तक का काम किया। कुछ समय तक उन्होंने पाठ्यपुस्तकें भी लिखीं।

सहर्ष स्वीकारा है

Q. टिप्पणी कीजिए : गरबीली गरीबी, भीतर की सरिता, बहलाती सहलाती आत्मीयता, ममता के बादल

→ गरबीली गरीबी – गरीबी का मतलब प्रायः अभिशाप समझा जाता है लेकिन कवि गरीबी को गरबीली मानता है क्योंकि उसका विचार है कि जिस प्रकार भूखा व्यक्ति भोजन का स्वाद बता सकता है उसी प्रकार अमीर बनने का सच्चा सुख गरीब को ही हो सकता है। इसीलिए कवि ने गरीबी के साथ गरबीली विशेषण प्रयुक्त किया है।

भीतर की सरिता – कवि के विचारानुसार मन ही विभिन्न प्रकार के भावों व विचारों का स्रोत है। कवि ने इन अमूल्य भावों को ही भीतर की सरिता कहा है।

बहलाती - सहलाती आत्मीयता – कवि का विचार है कि अपनेपन की अति मोह का कारण बनती है और इस मोह के कारण व्यक्ति अपने आपको बंधन में बंधा हुआ महसूस करता है और यही अपनापन उसे अपने जाल में फँसाए रखता है।

ममता के बादल – कवि के हृदय में माँ के ममत्व का अहसास हमेशा बना रहा है। जैसे बादल आसमान में छाए रहते हैं, ठीक उसी प्रकार माँ बिछड़ कर भी अपने ममत्व के अहसास से कवि के हृदय में विद्यमान है।

Date ________
Page ________

Q. इस कविता में और भी टिप्पणी-योग्य पद-प्रयोग हैं। ऐसे किसी एक प्रयोग का अपनी ओर से उल्लेख कर उस पर टिप्पणी करें।

→ इस कविता में टिप्पणी योग्य महत्त्वपूर्ण पद 'सहर्ष स्वीकारा है' है। सहर्ष का अर्थ है - खुशी-खुशी और स्वीकारा का अर्थ है - स्वीकार करना। इस कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने जीवन के सुख-दुःख हार-जीत, कोमल-कठोर हर प्रकार की स्थिति में एक समान भाव बनाए रखने चाहिए और कठिन से कठिन परिस्थितियाँ आने पर हमें उसका खुशी-खुशी सामना करना चाहिए।

Q. व्याख्या कीजिए -

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है

मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है!

उपर्युक्त पंक्तियों की व्याख्या करते हुए यह बताइए कि यहाँ कवि चाँद की तरह आत्म पर झुका चेहरा भूलकर अंधकार-अमावस्या में क्यों नहाना चाहता है?

→ व्याख्या भाग काव्यांश 2 में देखें। कवि चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा कोमल भावनाओं व स्मृतियों का प्रतीक है। कवि इनकी मोह में नहीं फँसना चाहता, वह तो केवल जीवन की वास्तविकताओं और कठोर विचारों का सामना करना चाहता है। यहाँ कवि अपने

आपको विस्मृतियों के अंधकार में विलीन कर देना चाहता है। इस तरह कवि के अनुसार दुःखों व कष्टों का सामना किए बिना जीवन में सुखों का प्रकाश प्राप्त नहीं किया जा सकता।

8. तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार - अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है।

क) यहाँ अंधकार - अमावस्या के लिए क्या विशेषण इस्तेमाल किया गया है और उससे विशेष्य में क्या अर्थ जुड़ता है,
→ कवि ने अंधकार-अमावस्या के लिए 'दक्षिणी-ध्रुवी' विशेषण का प्रयोग किया है। यह अंधकार की सघनता को और अधिक गहरा कर देता है।

ख) कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में किस स्थिति को अमावस्या कहा है?
⇒ कवि ने व्यक्तिगत स्थिति में अपने प्रेरक को न भूल सकने की स्थिति को अमावस्या कहा है।

ग) इस स्थिति से ठीक विपरीत ठहरने वाली कौन-सी स्थिति कविता में व्यक्त हुई है? इस वैपरीत्य को व्यक्त करने वाले शब्द का व्याख्यापूर्वक उल्लेख करें।
→ कविता की निम्न पंक्तियाँ विपरीत स्थिति को व्यक्त करती हैं:-

Scanned with CamScanner

इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय उजेला अब
सहा नहीं जाता है।

व्याख्या : कवि अपने मन पर अपने प्रेरक की यादों का सुंदर उजाला मानता है। इसलिए वह उन यादों को चाहकर भी भुला नहीं पाता है।

ख) कवि अपने संबोध्य (जिस को कविता संबोधित है। कविता का 'तुम') को पूरी तरह भूल जाना चाहता है, इस बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए क्या युक्ति अपनाई है? रेखांकित अंशों को ध्यान में रखकर उत्तर दें।

→ कवि यहाँ अपनी प्रणेता को भूलने के लिए विस्मृतियों के अंधकार में विलीन हो जाना चाहता है। वह इन विस्मृतियों को काली अमावस्या के समान ग्रहण कर लेना चाहता है। वह अपनी ~~से~~ प्रणेता की कोमल स्मृतियों को छोड़ जीवन के ~~हस~~ दृढ़ अनुभवों में खो जाना चाहता है।

Q. बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है - और कविता के शीर्षक 'सहर्ष स्वीकारा है' में आप कैसे अंतर्विरोध पाते हैं।

> कवि इन पंक्तियों में एक ओर तो अपनेपन की कोमल व मधुर भावनाओं को सहन नहीं कर पा रहा है। कविता का शीर्षक 'सहर्ष स्वीकारा है' द्वारा कवि संकेत करना चाहता है कि मैंने जीवन में आई प्रत्येक परिस्थिति को खुशी-खुशी स्वीकार किया है। उन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति या प्रेरणा मुझे बहलाती सहलाती आत्मीयता से प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner